मोहोल पहाड़ पुखराजी

राग श्री मारू

सुख लीजो मोमिन, पहाड़ मोहोलके आराम।
अर्स अजीमके कायम, निस-दिन एही ताम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अर्श अजीम (परमधाम) में पुखराज पहाड़ के महल को देखो। रात-दिन अपनी आत्मा की यही खुराक है।

हौज जोए अर्स जिमिएं, जो फुरमान में फुरमाए।
पहाड़ मोहोल पेड़ इनका, सो हक हुकमें देऊं बताए।। २ ।।

हौज कौसर तालाब, जमुनाजी, परमधाम की जमीन जिसका कुरान में वर्णन आया है, उन सबका मूल पुखराज पहाड़ है। श्री राजजी महाराज के हुकम से बतलाती हूं।

एक जवेर इन जिमी पर, बीच अर्स एक नंग।
बोहोत नाम जवेरों के, जुदे नाम जुदे रंग।। ३ ।।

परमधाम के बीच में एक जवेर (हीरे) का एक नग (नगीने) का यह पुखराज पहाड़ है। वैसे जवेरों के और बहुत नाम हैं और बहुत उनके रंग है।

सो बड़ा पहाड़ एक नंग का, तिनमें कई मोहोलात।
चौड़ा ऊंचा तेज में, क्यों कहूं अर्स की बात।। ४ ।।

उन सब में एक ही नग का पुखराज पहाड़ है। उसमें कई महलों के समूह हैं। कुछ चौड़े और कुछ ऊंचे हैं। परमधाम की इस हकीकत का बयान मैं कैसे करूं?

गिरद मोहोल बराबर, तरफ तले संकड़ा।
मोहोल बढ़ते बराबर, चढ़ते अति चौड़ा।। ५ ।।

यह पुखराज पहाड़ गोल है जो नीचे से संकरा है और जैसे-जैसे ऊपर चढ़ते हैं महल बराबर बढ़ते जाते हैं।

गिरदवाए फेर देखिए, आकास न माए झलकार।
मोहोलातें सब नूर की, जुबां कहा केहेसी विस्तार।। ६ ।।

चारों तरफ घूमकर देखें तो इसकी झलकार आसमान में नहीं समाती। यहां की सब हवेलियां नूर की हैं। जबान से कैसे वर्णन होगा?

हरे पीले लाल उज्जल, संग सोब्रन नूर अमान।
एक जवेर इन भोम का, भरया रोसन नूर आसमान।। ७ ।।

हरा, पीला लाल, सफेद सभी सोने के नूर जैसे अच्छे लगते हैं। इस भोम के एक जवेर की रोशनी आसमान में छा जाती है।

कई विध के इत मोहोल हैं, सब रंग के इत बन।
कई जल धारें फुहारे, रस मेवे स्वाद सबन।। ८ ।।

यहां कई तरह के महल हैं और सभी रंग के वन हैं। कई जल की धाराएं और फव्वारे चलते हैं। मेवों के बड़े अच्छे स्वाद हैं।

Nijanand App

ए पर्वत इन भांत का, नैनों निमख न छोड़या जाए।
क्यों कहूं खूबी इन जुबां, देखत रह्या हिरदे भराए।। ९ ।।

यह पहाड़ इस तरीके का है कि एक क्षण के लिए भी नजर हटती नहीं है तो इस जबान से इसकी खूबी का वर्णन कैसे हो? इसे देखकर हृदय आनन्द से भर जाता है।

ऊपर सोब्रन सिखर तले, सोभित जल उतरत।
खूबी खुसबोए बन में, आए मिल्या ताल जित।। १० ।।

ऊपर का आकाशी महल सोने जैसा लगता है। वहां से जल नीचे उतरता है। वन की सुन्दरता और खुशबू हौज कौसर ताल तक जाती है, जहां यह जल जाकर समाता है।

खूबी इन पहाड़ की, ऊंचा माहें आकास।
कई मोहोल बैठक रोसनी, ज्यों रोसन धाम प्रकास।। ११ ।।

इस पहाड़ की ऊंचाई की खूबी आकाश में दिखाई पड़ती है। इसमें कई महल और बैठने के ठिकाने (बंगले) बने हैं और रंग महल जैसा तेज झलकता है।

दूरथें अति सुन्दर, आए देखें सोभा अतंत।
इन जुबां इन पहाड़ की, क्यों कर करे सिफत।। १२ ।।

यह दूर से ही बहुत सुन्दर लगता है और पास में आकर देखने से सुन्दरता अति प्यारी लगती है। यहां संसार की जबान से पहाड़ की सिफत कैसे बयान हो?

कई बैठक तले ऊपर, कई ठौर तले कराड़।
सोभा जल बन सोभित, अतंत खूबी इन पहाड़।। १३ ।।

कई बैठकें नीचे बनी हैं तथा कई ऊपर। कई ठिकानों पर नीचे कुर्सी के चबूतरे बने हैं। जहां बैठकर जल, वन और पहाड़ अति शोभायमान दिखाई देते हैं।

उपरा ऊपर भोम अनेक, अति विराजे सोए।
खूबी इन मोहोलन की, देख देख मन मोहे।। १४ ।।

यहां से एक से बढ़कर ऊपर एक अधिक भोम तक महलों की बढ़ने की शोभा है। इन महलों को देख-देखकर मन मोहित हो जाता है।

जड़या पहाड़ जानों सोने सों, जुदे जुदे जवेरन।
ए मोहोल अति सुन्दर, बड़ी बैठकें रोसन।। १५ ।।

ऐसा लगता है मानो यह पहाड़ सोने में नगों से जड़ा है। यह बहुत ही सुन्दर है। यहां की बड़ी बैठकें भी सुखदायी हैं।

माहें कई नेहेरें चलें, सब पहाड़ में फिरत।
कई फुहारे चेहेबच्चे, सब ठौरों खूबी करत।। १६ ।।

यहां कई तरह से नहरें चलती हैं जो पूरे पहाड़ में घूमती हैं। कई फव्वारे और चहबच्चे हैं जो सुन्दरता को बढ़ा देते हैं।

Nijanand App

ए मोहोल बड़े अति सुन्दर, एक दूजे थें चड़त।
ज्यों ज्यों ऊपर चढ़िए, त्यों त्यों खूबी बढ़त।। १७ ।।

यहां के महलों की सुन्दरता एक-दूसरे से बढ़ती जाती है। जैसे-जैसे ऊपर चढ़ते हैं, वैसे-वैसे खूबी बढ़ती जाती है।

ए मोहोल बैठन के, अति बड़ियां पड़साल।
बोहोत देखी मैं बैठकें, पर ए सोभा अति कमाल।। १८ ।।

इन महलों में बैठने की बड़ी-बड़ी दहलाने हैं और कई बैठकों की शोभा कमाल की दिखाई देती है।

ऊपर चौक लग चांदनी, अतंत है विसाल।
नजर न पीछी फिर सके, देख देख होइए खुसाल।। १९ ।।

चौक से लेकर चांदनी तक इनका फैलाव है। इन्हें देख-देखकर खुशी होती है। नजर पीछे नहीं हटाई जाती।

कोटक कचेहेरी बनी, फिरतियां गिरदवाए।
ए सुन्दरता इन जुबां, मोपे कही न जाए।। २० ।।

यहां घेरकर करोड़ों भवन बने हैं। इनकी सुन्दरता इस जबान से कहने में नहीं आती।

ज्यों ज्यों नैनों देखिए, त्यों त्यों लगत सुन्दर।
न्यारी नजर न होवहीं, चुभ रह्या रूह अन्दर।। २१ ।।

जैसे-जैसे नजर से देखते हैं, वैसे-वैसे ही अधिक सुन्दर लगते हैं। नजर किसी तरह से अलग नहीं होती, यह दृश्य आत्मा के अन्दर भर जाता है।

अति बड़े सुभट सूरमें, सेन्यापति सिरदार।
मेला होत है इन मोहोलों, कई जातें जिनसें अपार।। २२ ।।

यहां बड़े-बड़े पशु-पक्षी वीर बहादुर सेनापति सिरदारों का मेला इन महलों में होता है जिनकी जातियां बेशुमार हैं।

रूहें राज स्यामाजी बिराजत, निपट सोभा है इत।
ऊपर तले बीच सुन्दर, खूबी-खुसाली करत।। २३ ।।

जब सखियां, श्री राजजी और श्री श्यामाजी बैठते हैं तब शोभा और बढ़ जाती है। ऊपर, नीचे, बीच में सब जगह की सुन्दरता अति सुखदायी होती है।

इत सिखरें सब पहाड़ की, जानों जवेर सब नूर।
सिखरें सब आसमान लों, जानों के गंज जहूर।। २४ ।।

पूरे पहाड़ का शिखर (आकाशी महल) एक ही नग का जगमगा रहा है। इसके तेज की किरणें आसमान तक बेशुमार जाती हैं।

इन मोहोलों में देखिए, अतंत सोभा थंभन।
उपरा ऊपर देखिए, जुबां कहा करे बरनन।। २५ ।।

इन महलों में अन्दर जाकर देखें तो छज्जों के थंभ की शोभा एक दिलकश नजारा है जिसे ऊपरा ऊपर देखने में ही कमाल का नजारा है। जबान इसका वर्णन कैसे करे?

Nijanand App

फिरता पेड़ जो पहाड़ का, तले बन्या सकड़ा ए।
फिरते थंभ चौड़े चढ़े, जाए फैल्या आसमान में जे।। २६ ।।

मध्य का पेड़ नीचे संकरा है और ऊपर फैलता जाता है। चारों तरफ चौड़ाई में थंभों की शोभा बढ़ती जाती है और यह पेड़ ऊपर चांदनी तक फैलता जाता है।

ऐसे ही थंभ तिन पर, चौड़ा अति विस्तार।
या विध चढ़ता चढ़या, गिरदवाए बनी किनार।। २७ ।।

ऐसे ही थंभ दूसरे चार शोभा देते हैं जिनकी शोभा हर एक भोम में चौड़ाई में बढ़ती जाती है और बढ़ते-बढ़ते पुखराज के किनारे तक छज्जे चले जाते हैं।

ज्यों ज्यों मोहोल ऊंचे चढ़े, तिन चौगिरद थंभ हार।
चौड़ा ऊंचा चढ़ता, चढ़ता चढ़या विस्तार।। २८ ।।

जैसे-जैसे ऊंची मंजिल पर चढ़ते हैं उनके चारों तरफ थंभों की हार बढ़ती जाती है। चौड़ाई में ऐसे ऊंचे चढ़ते हुए पूरे पहाड़ को ढांप लेते हैं।

चढ़ते मोहोल मोहोलन पर, जाए लग्या आसमान।
चढ़ती सोभा सुन्दर, ए क्यों कर कहे जुबान।। २९ ।।

इस तरह प्रत्येक चढ़ती भोम में महलों पर महल बढ़ते जाते हैं और आकाश तक शोभा बढ़ती है। यहां की शोभा का संसार की जबान से कैसे वर्णन करूं?

मोहोल बड़े सोभा बड़ी, थंभ फिरते दोरी बंध।
जोतें जोत जगमगे, क्यों कहूं सोभा सनंध।। ३० ।।

इन बड़े महलों की बड़ी शोभा है और एक ही डोरीबन्द (पंक्ति) में आए हैं। इनकी जगमगाहट की शोभा कैसे वर्णन करूं?

तले से ऊपर लग, मोहोल झरोखे पड़साल।
कई चौक थंभ कचेहेरियां, कई देहेलानें दिवाल।। ३१ ।।

नीचे से ऊपर तक महल, झरोखे और दहलानें दिखाई देती हैं। कई चौक, थंभा, भवन, दहलानों की तथा दीवार की शोभा हैं।

मोहोलन पर मोहोल विस्तरे, सोभा चढ़ती चढ़ी अतंत।
कोई मोहोल बड़े इन भांत के, सब नजरों आवत।। ३२ ।।

महल पर महल बढ़ते जाते हैं और उनकी शोभा उनके समान बढ़ती जाती है। उनमें से कोई महल इस तरह के बड़े हैं जहां से सब कुछ दिखाई देता है।

फिरते मोहोल अति बने, कई मोहोलातें जे।
कई रंगों चरनी बनी, सब एक जवेर में ए।। ३३ ।।

कई रंगों के महलों के समूह घेरकर बने हैं। कई रंगों की सीढ़ियां एक जवेर में बनी दिखाई देती हैं।

Nijanand App

हजार हांसों सोभित, तापर गुरज बिराजत।
मोहोल माहें विध विध के, बैठक झरोखे जुगत।। ३४ ।।

पुखराज पहाड़ के हजार हांस हैं और ऊपर हजार गुर्ज बने हैं। अन्दर कई तरह के महल बैठक और झरोखे शोभा देते हैं।

हजार हांसों हजार रंग, हर हांस हांस नया रंग।
थंभ रोसन जिमी लग चांदनी, करत मिनो मिने जंग।। ३५ ।।

हजार हांस में हजार रंग दिखाई देते हैं और हर हांस में एक नए रंग की शोभा है। जमीन के नीचे थंभ से लेकर चांदनी तक इनके तेज की किरणें आपस में टकराती हैं।

ऊपर चौड़ा तले सकड़ा, दोरीबंध देखत।
तले से ऊपर लग देखिए, गिरदवाए सब सोभित।। ३६ ।।

पुखराज पहाड़ ऊपर से चौड़ा, नीचे से संकरा है। यदि नीचे से ऊपर तक देखें, तो सब महल एक गोलाई में डोरीबन्द नजर आते हैं।

मोहोल चारों तरफों, हजार हांसों माहें।
ए मोहोल पहाड़ जवेर के, क्यों केहेसी जुबांए।। ३७ ।।

महल के चारों तरफ हजार हांसों में एक जवेर के पहाड़ की शोभा इस जबान से कैसे कही जाए?

बराबर दोरीबंध ज्यों, फिरती पहाड़ किनार।
सो इन मुख सोभा क्यों कहूं, झलकारों झलकार।। ३८ ।।

पहाड़ के किनारे घेरकर डोरीबन्द दिखाई देते हैं। इस मुख से उसकी झलकार की शोभा का कैसे वर्णन करूं?

एक नकस बरनन ना कर सकों, ए अति बड़ो बयान।
ए मोहोल पहाड़ अर्स के, कहा कहे एह जुबान।। ३९ ।।

एक नक्शकारी (चित्रकारी) का वर्णन करना सम्भव नहीं है। फिर ऐसे विशाल पहाड़ का वर्णन कैसे करें?

गुरज हजार बीच चांदनी, सब गुरज बराबर।
कई कोट जुबां इन खूबी की, सिफत न सके कर।। ४० ।।

हजार गुर्जों के बीच चांदनी की शोभा है और सब गुर्ज बराबर हैं। यहां की करोड़ जबानें भी इस सुन्दरता का बयान नहीं कर सकतीं।

तले चार गुरज बिलंद हैं, थंभ होत ज्यों कर।
चारों भोम से छात लग, आए पोहोंचे ऊपर।। ४१ ।।

नीचे चार बड़े गुर्ज खम्भे के समान हैं और चारों की बढ़ती छतें चांदनी तक आती हैं।

सो याही छात को लग रहे, ज्यों एक मोहोल चार पाए।
पेड़ पांचमा बीच में, मोहोल पांचों जुदे सोभाए।। ४२ ।।

यह छतें ऐसी लगती हैं जैसे एक महल के चार थंभ हों। पांचवां पेड़ बीच में है। इन पांचों के महलों की अलग शोभा है।

Nijanand App

सो पांचों माहें मोहोलात हैं, रंग नंग जुदी जिनस।
देख देख पांचों देखिए, एक पे और सरस।।४३।।

इन पांचों में मोहलातें हैं जिनके रंग और नग अलग-अलग किस्म के हैं। जब पांचों को एक के बाद एक देखते हैं, तो एक से दूसरा श्रेष्ठ दिखाई देता है।

कहा कहूं क्यों कर कहूं, एक जुबां मोहोल अनेक।
इन झूठी जिमीके साजसों, क्यों कहूं अर्स विवेक।।४४।।

कैसे कहूं, क्या कहूं, मेरी जबान एक है, महल अनेक हैं। संसार की झूठी जमीन की उपमा से अखण्ड परमधाम का वर्णन कैसे करूं?

तले से ऊपर लग, थंभ झरोखे देहेलान।
ए बैठकें बका मिने, रूहें संग सुभान।।४५।।

यहां से ऊपर तक थंभ, झरोखे और देहलानों की शोभा है। सखियां श्री राजजी और श्री श्यामाजी के साथ इस अखण्ड घर की बैठकों में आनन्द लेती हैं।

ए पांचों फेरके देखिए, खोलके रूह नजर।
ले भोम से लग चांदनी, खूब ऊपर खूबतर।।४६।।

आत्मा की अन्तरदृष्टि से इन पांचों को फेरकर देखें तो नीचे की भोम से चांदनी तक इनकी खूबी बढ़ती ही जाती है।

एक तरफ अर्स हौज के, तरफ दूजी हौज जोए।
और दोए तरफ दोए चरनियां, ज्यों जड़ित जगमगे सोए।।४७।।

पुखराजी ताल के एक तरफ रंग महल है दूसरी तरफ जमुनाजी। दो तरफ दो सीढ़ियां जगमग-जगमग करती हैं। यह सीढ़ियां घाटियों की हैं।

ए छठा पहाड़ हौज जोए का, ताके तले बड़ो विस्तार।
आए पोहोंच्या अधिक ऊपर, इत मिल गया इनके पार।।४८।।

जमुनाजी का पुखराजी ताल छठे पहाड़ के समान शोभा देता है जिसके नीचे बहुत बड़ा विस्तार है। इसके छज्जे ऊपरा-ऊपर बढ़कर पुखराज के छज्जों से मिल गए हैं।

तले छे जुदे रहे, ऊपर पहाड़ मोहोल एक।
और दोए कही जो घाटियां, भए आठ ऊपर इन विवेक।।४९।।

नीचे से छः अलग-अलग दिखाई देते हैं। ऊपर पहाड़ का महल एक है। पच्छिम तथा उत्तर में दो घाटियां हैं, इसलिए यह आठ पहाड़ की शोभा हो गई।

चरनी दोए बड़ी कही, जो बड़े गुरज दरम्यान।
आइयां जिमी से ऊपर लग, क्या करसी जुबां बयान।।५०।।

दो बड़ी सीढ़ियां (घाटियां) चांदनी पर दो बड़े गुर्जों में आकर मिलती हैं। जमीन से ऊपर तक इन सीढ़ियों की शोभा जबान से वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

बड़ियां ऊंची आसमान लों, और खूबी देत अति जोर।
जोत जवेर अति झलकत, किनार दोऊ सीधी दौर।।५१ ।।

यह दोनों सीढ़ियां (घाटियां) सीधी आसमान तक जाती हैं। इनकी शोभा अत्यन्त अधिक है। इनके जवेरों की झलकार अधिक है। किनारे दोनों एक सीध में हैं।

दोऊ सीढ़ियों के सिरे पर, दोए दरवाजे बुजरक।
दोऊ तरफों दो दिवालें, सोभी वाही माफक।।५२ ।।

दोनों सीढ़ियों के ऊपर दो बड़े दरवाजे आए हैं। दोनों तरफ की दीवारें दरवाजे के अनुसार हैं।

दोए द्वार इत और हैं, इन चांदनी चार द्वार।
सो चारों तरफों जगमगे, सोभा अलेखे अपार।।५३ ।।

यहां पर दो दरवाजे और हैं। चांदनी के ऊपर इस तरह से चार दरवाजे चारों दिशाओं में हैं। यह चारों तरफ जगमगा रहे हैं जिससे शोभा और अधिक हो गई है। (नोटः दो दरवाजे सीढ़ियों के, एक दरवाजा पूरब की दिशा बंगलों का और एक दरवाजा दक्षिण में रंग महल की तरफ।)

गुरज दोए हर द्वारने, इत बड़े दरबार।
सो तेज जोत नूर को, कह्यो न जाए सुमार।।५४ ।।

हर द्वार के ऊपर दो बड़ी गुर्जें हैं जिनके तेज की रोशनी बेशुमार है।

ए जो गिरदवाए मोहोल चांदनी, बीच मोहोल गुरज हजार।
जोत बीच आसमान के, मावत नहीं झलकार।।५५ ।।

हजार गुर्जों के बीच में चांदनी के ऊपर महल बने हैं जिनकी किरणें आसमान तक झलकती हैं।

ए अति बड़े मोहोल किनारे, और कंगूरे अति सोभित।
सोभा इन मोहोलन की, जुबां कहा करसी सिफत।।५६ ।।

यह महल बहुत बड़े हैं जिन पर सुन्दर कंगूरे शोभा देते हैं। इन महलों की शोभा यहां की जबान कैसे वर्णन करें?

हौज जोए इन पहाड़ से, सो पीछे कहूं सिफत।
बड़े मोहोल पर मोहोल जो, ए खूबी आकास में अतंत।।५७ ।।

जमुनाजी का तालाब (हौज, पुखराजी ताल) का वर्णन बाद में करूंगी। यहां पर महलों पर महल बने हैं जिनकी खूबी आकाश तक फैली है।

इन मोहोल ऊपर जो चांदनी, तिन पर जो मोहोलात।
सो विस्तार है अति बड़ा, या मुख कह्यो न जात।।५८ ।।

महलों के ऊपर चांदनी है। चांदनी के ऊपर भी सुन्दर जवेरात के महल बने हैं। इनका विस्तार बहुत भारी है। इनका वर्णन करना असम्भव है।

इन पहाड़ ऊपर मोहोलात जो, ऊंचा बड़ा विस्तार।
गिरद झरोखे ऊपर तले, याको क्यों कर होए निरवार।।५९ ।।

पुखराज पहाड़ के ऊपर आकाशी महल का बड़ा विस्तार है। इसके चारों तरफ ऊपर-नीचे हवेलियों में झरोखे हैं जो बेशुमार हैं।

Nijanand App

चारों तरफों दरवाजे, आगूं चौखूंटे चबूतर।
थंभ चार हर चबूतरे, मोहोल इन आठों पर।। ६० ।।

चारों दिशाओं में दरवाजे के आगे चौखूना (चार कोने वाला) चबूतरा है। इन चारों के चारों कोनों पर चार थंभ हैं और आठों चबूतरों के ऊपर आठ द्योहरियां आई हैं।

चारों तरफों द्वारने, और चारों खूंटों गुरज चार।
कहा कहूं अंदर मोहोल की, जिनको नहीं सुमार।। ६१ ।।

चारों तरफ के दरवाजों के अतिरिक्त चारों कोनों पर चार गुर्ज हैं। महल के अन्दर की शोभा क्या कहूं? बेशुमार है।

इनके आठ चबूतरे, तिन आठों पर आठ गुरज।
आकासमें जाए जगमगे, करें जंग जोत सूरज।। ६२ ।।

आठों चबूतरों के आठ गुर्ज आकाश में जगमगाते हैं जिनकी किरणें सूर्य से टकराती हैं।

इन आठों बीच चार द्वार ने, कई सोभा लेत अपार।
कठेड़ा आठों चबूतरे, तरफ चारों चार द्वार।। ६३ ।।

इन आठों के बीच चार दरवाजों में कई तरह की शोभा है। आठों चबूतरों पर चारों तरफ से कठेड़ा लगा है। ऐसे सुन्दर चार द्वार हैं।

चार गुरज चार खूंट के, माहें मोहोल फिरते गिरदवाए।
फिरते झरोखे सिरे लगे, आसमान में पोहोंचे आए।। ६४ ।।

चार गुर्ज आकाशी महल के चारों कोनों पर हैं। अन्दर घेरकर मोहोलात हैं (जो तेरह की तेरह हारें हैं, १६९)। इन सबके झरोखे घेरकर आए हैं। यह अति सुन्दर हैं और इनकी आसमान जैसी ऊंचाई है।

आठों खांचों के गुरज जो, छ्यानब्बे गुरज कहे।
बारे गुरज अव्वल कहे, सब एक सौ आठ भए।। ६५ ।।

आठों खांचों के गुर्ज ९६ हैं। बारह गुर्जों का वर्णन हो चुका है। सब एक सौ आठ गुर्ज हुए।

सब मोहोल अति सुन्दर, चौखूंटे एक सौ चार।
चार गिरद चार खूंट के, एक सौ आठ यों सुमार।। ६६ ।।

यह महल बहुत सुन्दर हैं। चौखूने एक सौ चार गुर्ज हैं और चार कोने के गुर्ज पांच पहल के हैं। सब एक सौ आठ हुए।

दिवालां आकास लों, करे जोत जोत सों जंग।
बिलंद झरोखे कई थंभ, हिसाब ना जिनस रंग।। ६७ ।।

इस आकाशी महल की दीवारों का तेज आपस में टकराता है। इनमें कई बड़े-बड़े झरोखे हैं और थंभ हैं जिनके रंग बेशुमार हैं।

चारों तरफों मोहोलात के, क्यों कहूं खूबी ए।
कई रंग नंग थंभ जवेरके, चारों तरफों झरोखे।। ६८ ।।

आकाशी महल के चार तरफ की शोभा बेशुमार है। कई रंग के नगीनों के थंभ जवेरात के हैं और और चारों तरफ झरोखे हैं।

Nijanand App

एक सौ आठ गुरज जो, ऊपर जाए लगे आसमान।
कलस रोसन कई तिन पर, सो जाए न कहे जुबान।।६९ ।।

आकाशी महल के एक सौ आठ गुर्ज ऊपर आसमान में शोभा देते हैं। इन गुर्जों में कलशों की जो चमक है उसकी शोभा का वर्णन यहां की जबान से कैसे बयान करें?

माहें मोहोल कई विध के, कई कचेहेरी देहेलान।
कई मन्दिर हवेलियां, क्यों कर कहूं बयान।।७० ।।

उसके अन्दर कई तरह के महल हैं। कई तरह के मन्दिर, दहलानें, हवेलियां और बैठकें हैं। इनका कैसे बयान करें?

कई अंदर नेहेरें फिरें, माहें हवेलियों चेहेबच्चे।
खुसबोए फूल मेवे कई, माहें बैठक कई बगीचे।।७१ ।।

हवेलियों के अन्दर चहबच्चा हैं, नहरें चलती हैं। कई तरह के खुशबूदार फूल हैं, मेवा हैं और बगीचों में बैठकें हैं।

बाहेर देखाई माफक, अंदर बड़ा विस्तार।
पहाड़ ऊपर या मोहोल में, आवत नहीं सुमार।।७२ ।।

बाहर की शोभा देखने योग्य है। अन्दर का विस्तार बहुत भारी है। पुखराजी पहाड़ के ऊपर इस आकाशी महल की शोभा बेशुमार है।

बड़े द्वार बड़े चबूतरे, इत सोने के कमाड़।
जड़ाव चारों द्वार ने, एक जवेर मोहोल पहाड़।।७३ ।।

पुखराज के चबूतरे के ऊपर चार बड़े दरवाजे हैं जिनमें सोने के किवाड़ लगे हैं। दरवाजे सुन्दर जड़ावदार हैं। पूरा पुखराजी पहाड़ एक ही नग का दिखाई देता है।

इन मोहोलों हक आवत, सुख देने रूहों सबन।
सुख इत के दिए जो ख्वाब में, सो जानें रूह मोमिन।।७४ ।।

श्री राजजी महाराज सखियों को आनन्दित करने के लिए यहां आते हैं। यह अखण्ड सुख सपने के संसार में वाणी के द्वारा देती हूं। उसकी लज्जत मोमिनों की आत्मा ही जानती है।

चरनी आठों चबूतरे, और ऊपर आठों के छात।
बड़े छज्जे चारों द्वार पर, सब फिरते छज्जे मोहोलात।।७५ ।।

सीढ़ियों (घाटियों) के दो नीचे तथा दो ऊपर चार चबूतरे एक में और चार दूसरी सीढ़ी में हैं। इन आठ चबूतरों पर छत आई है। चारों दरवाजों के ऊपर बड़े-बड़े छज्जे आए हैं और घेरकर महलों के छज्जे आए हैं।

कई कलस कई कंगूरे, आसमान में रोसन।
खूबी हक के अर्स की, इत क्यों कहूं जुबां इन।।७६ ।।

यहां पर कई कलश तथा कई कंगूरे आए हैं जो आसमान में जगमगा रहे हैं। श्री राजजी महाराज के परमधाम की इस खूबी का इस जबान से कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

जवेर अर्स जिमी के, और सोना भी जिमी अर्स।
जिमी रेत या दरखत, सब अर्स जिमी एक रस।। ७७ ।।

परमधाम के जवेर, सोना, रेती, पेड़ और सब जमीन एक रस हैं।

अर्स तरफ दाहिनी, तरफ सामी ताल जोए।
बांईं तरफ और पीछली, ए कही सीढ़ियां दोए।। ७८ ।।

पुखराजी पहाड़ के दाहिने तरफ रंग महल है। पूरब की दिशा में जमुनाजी का पुखराजी ताल है तथा उत्तर और पच्छिम में दो सीढ़ियां (घाटियों) की शोभा है।

अब कहूं इनका बेवरा, ए सब मोहोलात नंग एक।
ए लीजो नीके दिल में, केहेती हों विवेक।। ७९ ।।

अब इनका ब्यौरा बताती हूं। यह सब मोहोलातें एक ही नग (नगीने) की हैं जिसको दिल में धारण करना मैं हकीकत का बयान करती हूं।

ए चारों तरफ कहे पहाड़ के, बीच गुरज बड़े थंभ चार।
ए आठ निसान गिरद के, लीजो रूहें दिल विचार।। ८० ।।

पुखराज पहाड़ के चारों तरफ आठ निशान का वर्णन आया है। बीच में चार पेड़ थंभ के समान हैं। एक बीच का पानी का थंभा और दो घाटियों के तथा एक बंगले का यह आठ निशान पहाड़ के समान दिखाई देते हैं। हे रूहो! इसको दिल में विचार करके ग्रहण करना।

और मोहोलात इन ऊपर, सो नूर ऊपर जो नूर।
देत खूबी बीच अकास के, अवकास सबे जहूर।। ८१ ।।

पुखराज पहाड़ की शोभा उसके ऊपर आकाशी महल की शोभा आकाश में जगमग करती हैं।

एक सौ आठ गुरज कहे, जो करत ऊपर रोसन।
कंगूरे कलस ऊपर कई, देख होत खुसाल मोमिन।। ८२ ।।

यह एक सौ आठ गुर्ज आकाशी महल के ऊपर झलक रहे हैं जिनमें कंगूरे और कलशों की शोभा देखकर मोमिन खुश होते हैं।

इन मोहोलों बीच इमारतें, हिस्सा कोटमा कह्या न जाए।
ए खूबी सब्दातीत की, लीजो रूह के दिल लगाए।। ८३ ।।

आकाशी महल के (१६९) महल आए हैं। उनके भवनों की शोभा का करोड़वां हिस्सा भी वर्णन करने में नहीं आता। यह खूबी शब्दातीत है। हे रूहो! अपने दिल से देखना।

आगूं जल अति सोभित, तले गिरदवाए पाल।
तिन पर बन बिराजत, क्यों कहूं खूबी इन ताल।। ८४ ।।

पुखराजी पहाड़ के आगे पुखराजी ताल की शोभा है जिसके चारों तरफ नीचे पाल बनी है और पाल के चारों तरफ वन आए हैं। इस ताल की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

ए जवेर अर्स जिमीके, सब्दमें न आवत।
ए मोमिन देखो रूहसों, जुबां न पोहोंचे सिफत।। ८५ ।।

यह परमधाम की जमीन के जवेरात हैं। हे मोमिनो! अपनी आत्मा से देखो। इनकी शोभा का वर्णन करने में यहां की जबान नहीं पहुंचती।

Nijanand App

नसीहत लई जिन मोमिनों, ए तरफ जानें सोए।
अर्स हौज जोए, रूहें पेहेचान यासों होए।। ८६ ।।

जिन मोमिनों ने इस ज्ञान को ले लिया है, वही इसे जानते हैं। उन्हें ही रंग महल, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी की पहचान है।

जो अरवाहें अर्स की, सो यामें खेलें रात दिन।
ऊपर तले मांहें बाहेर, ए जरे जरा जाने मोमिन।। ८७ ।।

जो परमधाम की रूहें हैं वह रात-दिन यहीं खेलती हैं। वह ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर की जर्रा-जर्रा की हकीकत जानती हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, क्यों कहूं पहाड़ सिफत।
ए लज्जत तिनको आवसी, जाए हक बका निसबत।। ८८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! पहाड़ की सिफत का बयान कैसे करूं? जो श्री राजजी महाराज तथा अखण्ड घर के निसबती हैं उनको ही इसकी लज्जत आएगी।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ८३४ ।।

ताल बंगले जोए मोहोलात

मोहोल के तले ताल जो, तुम देखो अर्स अरवाए।
रहिए संग सुभान के, छोड़िए नहीं पल पाए।। १ ।।

आकाशी महल के नीचे पुखराजी ताल है। हे परमधाम की रूहो श्री राजजी महाराज के साथ रहकर इसकी शोभा को देखो और एक पल के लिए भी श्री राजजी महाराज के चरणों से अलग मत होना।

ऊपर पहाड़ के ताल जो, बोहोत बड़ो विस्तार।
तले बड़े मोहोलात के, सो नेक कहूं विचार।। २ ।।

पहाड़ के पुखराजी ताल का विस्तार बहुत बड़ा है। इसके नीचे बड़े-बड़े मोहोलात हैं। उसकी भी थोड़ी हकीकत बताती हूं।

बड़े देहेलान कचेहेरियां, बैठक बारे हजार।
हक हादी रूहन की, नाहीं सिफत सुमार।। ३ ।।

यहां बड़ी-बड़ी दहलानें है, पड़साल हैं। यहां बारह हजार रूहें बैठती हैं। श्री राजश्यामाजी और रूहें जब बैठते हैं तो वहां की शोभा बेशुमार हो जाती है।

थंभ बड़े जवेरन के, कहूं सो केते रंग।
बोहोत छज्जे कई रंगों के, करे जोत जोत सों जंग।। ४ ।।

यहां जवेरात के बड़े-बड़े थंभ हैं जिनमें कई तरह के रंग हैं। बहुत से कई रंगों के छज्जे हैं जिनकी किरणें आपस में टकराती हैं।

कई छज्जे ताल ऊपर, पड़त जल में झांईं।
मोहोल सबे माहें देखत, खूबी आवे न जुबां माहीं।। ५ ।।

कई छज्जे ताल के ऊपर हैं जिसकी झांई जल में पड़ती है। मोहोल की परछाई भी जल में दिखाई देती है। यहां की जबान से इस हकीकत का बयान कैसे करूं?

Nijanand App